



पृष्ठ 5 : आरक्षण

पृष्ठ 5 : अगली चौरी कहाँ होगी ?

## फृण्डा कॉर्नर

द्वितीय विश्व युद्ध के समय की तस्वीर

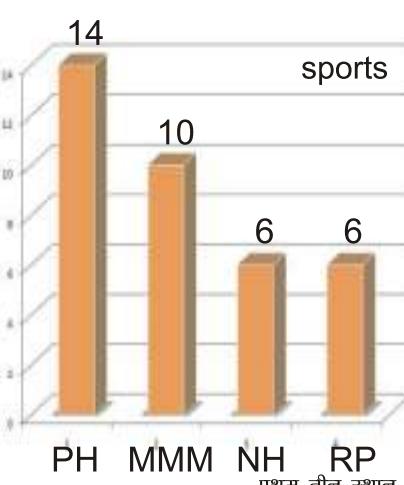
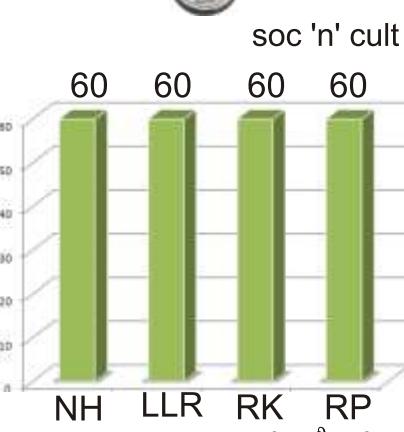


अगस्त, 1951 में सिर्फ 224 छात्र, 42 शिक्षक और 10 विभागों के साथ IIT खड़गपुर का पहला सत्र शुरू हुआ। सभी कक्षाएँ, प्रयोगशालाएँ एवं प्रशासनिक कार्यालय ओल्ड बिल्डिंग में स्थित थे। वर्तमान कैंपस का अभिकल्प प्रतिष्ठित स्थिति वास्तुकार डॉ वर्नर एम मोसर ने किया।

## पंजी Dude



GC मीटर



## 53वां दीक्षांत समारोह



प्रो. जॉर्ज एफ. मोहन्टी

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी का विषय रहा। KGP की सारी दीक्षांत समारोह आयोजित किया जाना को एक रथान पर और वो गया जिसका स्वरूप पिछले वर्षों से भी वर्षा ऋतु में डिनर कराना कुछ भिन्न था। इस बार 53वें मुश्किल काम था। इस काम में दीक्षांत समारोह की पूर्व संध्या पर सबसे बड़ी अङ्गठन जगह के रीयूनियन डिनर का आयोजन चुनाव को लेकर थी। अंततः किया गया। हालांकि kgp की विक्रमशिला को आयोजन स्थल जनता के लिए यह एक नया चयनित किया गया।

अनुभव था परन्तु 80 के दशक के रीयूनियन डिनर को सफल पूर्व इस प्रथा का प्रचलन था।

बनाने के लिए सभी छात्रावास के सन् 80 के दशक के पूर्व दीक्षांत HPs एवं प्रबंधन की बैठक हुई समारोह का आयोजन विस्तर से तथा लोगों को संध्या पूर्व ही कुछ अप्रैल माह के मध्य में होता था।

नियम निर्देश दे दिये गये थे।



श्री नारायण मूर्ति

80 के बाद पाठ्यक्रम पृष्ठति में बदलाव के कारण दीक्षांत समारोह का पूरी जनता को कई समूहों में आयोजन जुलाई अगस्त जैसे वर्षों से प्रभावित महीनों में होने लगा। और इन महीनों में खुतों क्षेत्र में डिनर का आयोजन करना असंभव हो गया। नए निदेशक महोदय के आगमन ने इस पूर्णप्रचलित प्रथा को पुनर्जन्म दिया।

अगर दीक्षांत समारोह कार्यक्रम के आयोजन की प्रक्रिया की बात करें तो इसकी शुरूआत सिनेट द्वारा प्रभारी प्राध्यापक और आयोजन समिति के चयन से होती है। इस बार के प्रभारी प्राध्यापक, डीन रनातकोत्तर एवं अध्ययन, प्रो. एस. के. सत्संगी के साथ हुए साक्षात्कार में उन्होंने दीक्षांत समारोह की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। दीक्षांत समारोह की तिथि के निर्धारण में जिन प्रमुख बातों का ध्यान रखा जाता है उनमें पुरुरुष छात्र, मुख्य अतिथि एवं पूर्व छात्रों के आवास की उपलब्धता है।

इस बार के दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. जॉर्ज एफ. मोहन्टी (2006 के भौतिकी के नोबेल पुरस्कार विजेता) थे।

चंपूर्ण दीक्षांत समारोह कार्यक्रम में रीयूनियन डिनर मुख्य चर्चा

### रोचक तथ्य

80 के दशक से पूर्व भी होता था रीयूनियन डिनर

सुरक्षा कारणों से 21वें दीक्षांत समारोह का आयोजन जिसमें मुख्य अतिथि श्रीमती इंदिरा गांधी थी, पहली बार नेताजी सभागृह में हुआ

पहले SF में न होकर दीक्षांत समारोह में होती थी Star-Night

इस वर्ष दीक्षांत समारोह के आयोजन में 1.52 लाख रुपये खर्च हुए जो HMC ने उठाया है

## दाल में काला

20 अगस्त की रात के 10 बजे कैम्पस के बाहर जाने माने रेल्टर्टेंट Little Sisters में एक ऐसी घटना हटी, जिसकी जानकारी हर उस शख्स को होनी चाहिए जो किसी तरह IIT खड़गपुर से जुड़ा है। उस रात आजाद हॉल का एक छात्र अपनी बर्थ डे ट्रीट के लिए अपने दस दोस्तों के साथ LS गया था। उन्होंने कुछ शाकाहारी और कुछ चिक्केन के व्यंजन के अँडर्ट दिये। आधे घंटे बाद परोसे हुए चिक्केन से अंजीब सी बदबू आ रही थी। इस कारण एक लाइफ को वहीं उल्टी ही गई। इस पर छात्र गुस्सा हो गये और वेटर से मैनेजर को बुलाने को कहा। बात बिगड़ती देख एक शख्स, जिसने खुद को मैनेजर बताया, ने आकर उस बदबूदार व्यंजन को कूड़ेदान में फेंकने की कोशिश की। पर छात्रों ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। छात्र भी आये दिन LS में होने वाले लापत्तारी से तंग हो चुके थे। उन्होंने मालिक से बात करने की ठान ली। लैकिन मैनेजर ने मालिक को बुलाने से लाफ़ इनकार कर दिया। नैंक - झोंक बढ़ते - बढ़ते बात मारपीट तक आ गई। मारपीट में चोट लगने के कारण एक लाइफ के होशोंश हो गया। छात्र भी उत्तेजित हो गये, पर 50 लोगों की भीड़ के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा।

लैकिन बात बढ़ती गई। रेल्टर्टेंट के सदस्यों ने एक छात्र को खींचकर चैनल गेट के अंदर बंद कर दिया और मारपीट की। जैसे - तैसे उसके दोस्तों ने उसे बाहर निकाला। पर इस चक्कर में एक दूसरा छात्र अंदर रह गया। उसके साथ भी मारपीट हुई। उसके साथ पड़े से जबरदस्त प्रहार हुआ, जिसे कारण उसका माथा फूट गया, चश्मा भी टूट गया। उसका मोबाइल भी छिन गया। बात कर्नल चक्करी, VP कुणाल कश्यप और उनमें से



बिगड़ती देख एक लाइफ के पुरी गेट स्थित Security counter को फोन किया। तब तक LS का मालिक भी आ चुका था और ज़गड़े में आपने लोगों का साथ देने लगा था। पुलिस के पहुंचने पर स्थिति नियंत्रित हो पाई।

Dean of student affairs (DOSA), प्रोफेसर हरे राम तिवारी और कर्नल चक्करी के पहुंचने पर मालिक ने लाइफों पर शाराब पीकर मारपीट करने का झूठ आरोप लगाया। लैकिन छात्रों ने इस बात से साफ़ इनकार किया तथा अपनी बात सावित करने के लिए वे खुन जाँच कराने को भी तैयार थे। जैसे - तैसे छात्रों को बाहर निकाला गया।

फिर संस्थान में प्रोफेसर हरे राम तिवारी, भी टूट गया। उसका मोबाइल भी छिन गया। बात कर्नल चक्करी, VP कुणाल कश्यप और उनमें से

कुछ छात्रों की बैठक हुई तथा FIR पर बातचीत हुई। संस्थान ने मामला पूरी तरह छात्रों को सौंप दिया, पर पूरा साथ देने का आश्वासन दिया। छात्रों के आपसी बात - चीत में निर्णय लिया गया कि अगर मामला कोर्ट तक पहुंचा तो उनके परिजन परेशान होंगे और पढ़ाई भी प्रभावित होंगी। अतः उन्होंने निर्णय लिया कि अगर LS का मालिक तिखित रूप से माफी माँगता है और साथ ही छीन हुआ मोबाइल वापस कर देता है, तो FIR दर्ज नहीं किया जाएगा। लैकिन LS के मालिक ने इन शर्तों को मानने से इनकार ही नहीं किया, बल्कि उन्होंने पर काऊंटर से 15000 रुपये, मैनेजर की सोने की चीज़ और एक महँगा मोबाइल सेट छीनने का झूठा फ़लज़ाम लगा दिया। द्यान देने वाली बात यह है कि घटना वाली रात उसने ऐसा कोई आरोप नहीं लगाया था। उसने यह भी आरोप लगाया कि छात्रों ने पी गई शाराब के पैसे भी नहीं दिये, जबकि छात्रों ने शाराब नहीं पी थी। LS के मालिक के खिलाफ़ कोई कानूनी कार्यवाही नहीं की गई, लैकिन VP और सभी हॉल के HPs ने मिलकर LS का बिष्काट करने का निर्णय लिया। संस्थान भी इस निर्णय पर इनके साथ है। लैकिन कुछ निर्णय आपको भी लेना है। विश्व के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में एक, IIT खड़गपुर में पढ़नेवाले छात्र भी ऐसी घटनाओं पर चुप्पी साधे रहेंगे तो ऐसी घटनाओं का अंत नहीं होगा। लड़ाई ही सभी समस्याओं का समाधान नहीं है, लैकिन चुप्पी साधे रहना भी इस मामले का हल नहीं है।

# रत्नतंत्रिता का 60वां वर्ष और हिन्दी की चुनौतियाँ

भारत देश में हिन्दी भाषा उस श्रेणी की एक त्रिता कहानी है जिसके आगे राष्ट्र शब्द जोड़कर एक औपचारिक सम्मान का चौला तो पहना दिया गया है, किन्तु देश के जीणीधार्तों की देख-रेख में उसका विकास भी उसी तरह हुआ है, जिस तरह पिछो पचास सालों में राष्ट्रीय खेल हाँकी ने विकास के विभिन्न रूपों से साक्षात्कार किया है। किन्तु सियासत के रखवालों पर भी क्या दोषारोपण किया जाये, क्योंकि सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न एक आम भारतीय की मानसिकता पर आता है। सबसे पहले मैथिलीशरण गुप्त जी की दो पंक्तियाँ रखना चाहूँगा-

“जिसको न निज भाषा, निज देश का अभिमान है वह नर नहीं है, पशु निरा और मृतक समान है”

ये पंक्तियाँ यदि सत्य हैं तो हिन्दी की सर्वप्रथम चुनौती देश के प्रत्येक नागरिक से जुड़ जाती है और यह वास्तविकता भी है कि आजादी के साठ साल बाद भी हम मानसिक गुतामी से तनिक भी उत्तर नहीं पाये हैं। अगर आप उच्च शिक्षा में रुचि रखते हैं, किन्तु आपने प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी माध्यम से की है तो समझ तीजिये कि राह में चलता कोई भी व्यक्ति आपको सर्वप्रथम माध्यम परिवर्तन करने की सलाह दे ही देगा। अभियांत्रिकी, चिकित्सा अथवा शिक्षा का कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, हिन्दी की आधारशिला पर उसका अधिकतम क्षया भविष्य ही सकता है, इस सच्चाई से हर कोई वाकिब है। धीरे-धीरे हालत ये होती जा रही है कि हिन्दी मात्र गरीबों की शिक्षा का माध्यम बनकर रह गया है। यह इस देश का दुर्भाग्य ही है कि एक संरक्षित या हिन्दी के विद्वान की बजाये दूर अंग्रेजी बोलने वाले बारहवीं पास को ज्यादा सम्मान दिया जाता है।



उसी अंग्रेजी का ज्ञान जीवन के विकास के लिये अनिवार्य प्रतीत होने लगे। इस भावना के पीढ़ी दर पीढ़ी संकरण का हिन्दी किस प्रकार से सामना कर पाती है इस प्रश्न का उत्तर तो आज की तारीख में शायद ही कोई दे पायेगा।

इस तकनीकी युग में हर भाषा के लिये अनिवार्य है कि वह साहित्य के साथ-साथ विज्ञान के प्रसार में भी अपनी भूमिका बढ़ाए। हिन्दी के संदर्भ में सबसे बड़ी विडिम्बना यही है कि हम

तकनीकी के लिये पूर्णतया अन्य देशों के अनुयायी हैं। वह तकनीकी बहुतायत हमारे देश के सप्तांतों की भी देन होती होगी किंतु उनके साथ सदैव NRI जुड़ा होता है। इसलिये हम बस इसी बात से खुश हो लेते हैं कि हमारे देश के प्रधानमंत्री संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी में भाषण देकर आये हैं। इन सबके बीच एक आवश्यक प्रश्न यह है कि वैशिख विकास की इस होड़ में क्या हिन्दी के लिये एक विकल्प प्रदान कर सकती है। जब तक कोई तकनीकी हिन्दी में प्रारम्भ होती है, तब तक वह बहुत पुरानी हो चुकी होती है। और यह कदम प्रसंभव नहीं है कि तकनीक की भाषा और लोक व्यवहार की भाषा एक दूसरे से भिन्न हो।

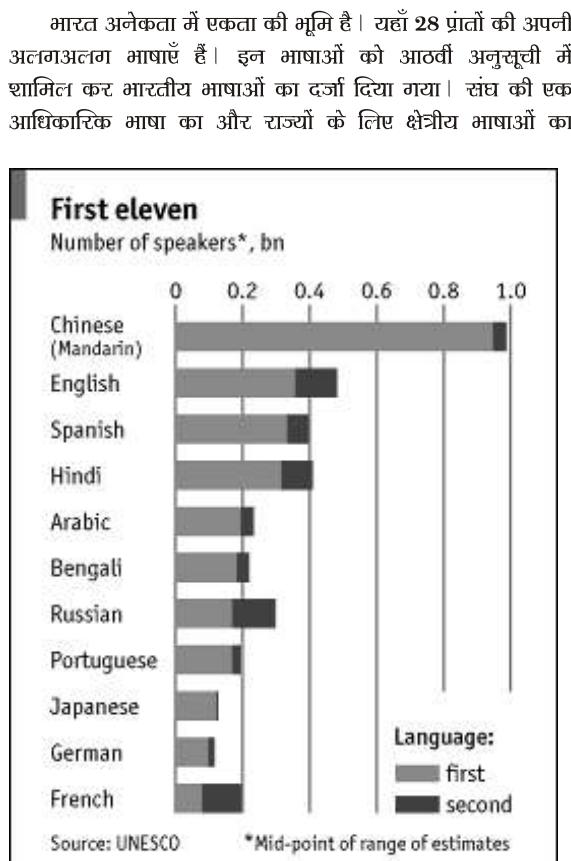
वास्तविकता के धारातल पर देखा जाये तो वर्तमान का दौर हिन्दी के लिये बहुत बड़ी चुनौती का दौर है। और इसकी सबसे बड़ी चुनौती तो यह है कि अधिकांश हिन्दीभाषी यह ही मानते हैं कि इस समस्या का समाधान असंभव है। या फिर ‘सो में से नियन्यानवे बैरीमान’ फिर भी मेरा देश महान् जैसे कथनों से अपना ही मज़ाक उड़ा लेते हैं। हमने हर बुराई एवं हर हार को अपनी नियति मान लिया है और इसीलिये किसी भी चीज़ में परिवर्तन की हम करना नहीं कर सकते। हर मंजिल के लिये कहीं न कहीं शुरूआत की जरूरत होती है। अंग्रेजी संरक्षित के आज का वैश्वीकरण उनके शाताल्डियों की मेहनत का परिणाम है। आज हम जहाँ भी हैं, किन्तु लक्ष्य को उसी दिशा में उन्मुख करना होगा जहाँ राष्ट्रीयता एवं स्वाभिमान हमारे हृदय का आधार बने। सौभाग्य से हमारे पास लोगों की कोई कमी नहीं है। कमी है तो बस इस बात की कि हमारी पीढ़ियों के हृदय का कोई कोना सो गया है। यह प्रश्न हिन्दी के प्रति चुनौतियों का नहीं वरन् हिन्दुस्तान के प्रति चुनौतियों का है। जरूरत है एक सकारात्मक शुरूआत की, जो व्यवहारिकता के धारातल पर हो, किन्तु एक व्यापक लक्ष्य के साथ।

“नैश्यनिक में झूलते निज राष्ट्र की नव आस हो। कोई अलौकिक शक्ति हो, अभिव्यक्ति हो विश्वास हो। नवकाल की नवज्योति हो, उत्कर्ष का आभास हो। मानो ना मानो सत्य में, तुम स्वयं में इतिहास हो।”

धीरज बैद

## हिन्दी - हमारी राष्ट्रभाषा ???

हाल में यह प्रश्न उठा कि किसी राष्ट्र को एक संस्कृता में बाँधने की सबसे मज़बूत कड़ी क्या है और उत्तर सर्वमान्य था शब्दों में अपने विचारों को प्रदर्शित करने की क्षमता हमें समकक्षी प्राणियों में सर्वोपरि बनाती है, अतः एक समान राष्ट्रीय भाषा ही वह कड़ी हो सकती है। अगला प्रश्न स्वाभाविक था कि बढ़ते अलगावावाद से सामना करने और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में क्या भारत इसकी कमी महसूस कर रहा है और फिर से सर्वोपरि भाषा की संविधान सभा ने एक प्रस्ताव पारित कर हिन्दी को संघ की राजभाषा अर्थात राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया। इसके साथ ही अगले 15 वर्षों के लिए आधिकारिक कार्यों के लिए अंग्रेजी के उपयोग का अनुमोदन किया। भारत एक जननांत्रिक गणतंत्र है और प्रस्तावना के अनुसार संविधान भारत की जनता के द्वारा भारतीय लोगों के कल्याण के लिए बनाया गया था। आश्चर्य की बात नहीं कि संविधान के ताग होने के 57 साल बीत जाने के बाद भी हम हर वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस खुद को यह याद दिलाने के लिए मनाते हैं कि संविधान के अनुच्छेद 343(1) द्वारा हिन्दी को संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाना अभी भी पूरी तरह नहीं हो पाया है, जबकि संविधान निर्माताओं ने सिर्फ 15 वर्षों की समय सीमा सोची थी।



उद्देश्य विभिन्न भाषायें बोलनेवाले लोगों के लिए एक समान भाषा उपलब्ध कराना था। वैश्वीकरण के इस दौर में क्या हिन्दी एक प्रांतीय या क्षेत्रीय भाषा रह गई है और क्या वह समान भाषा अंग्रेजी हो गई है? आखिरकार हिन्दी का परामर्श या कहिये उत्थान न हो पाने के क्या कारण हैं? स्वाधीनता के क्षुलुक वर्षों बाद ही भाषाई आधार पर राज्यों के बैंटवारे से भाषाई दायरा और चौड़ा हो गया। उत्तर बनाम दक्षिण के मुद्दे को भुनाने के लिए राजनेताओं ने इसे एक ज्वलंत मुद्दा बनाकर अपना राजनीतिक भविष्य तो संवार लिया। पर देश को कई भाषाई समूहों में बाँट भी दिया। इससे दक्षिण भारत में हिन्दी को वैमनस्यता के भाव से देखा जाने लगा और एक जनमानस के रूप में विकसित होने की सम्भावना धूमिल पड़ गई। फिर रोजगार के लिए अंग्रेजी की अनिवार्यता और इसकी व्यापक रक्षितार्थी ने तो हिन्दी को ढलान के मार्ग पर डाल दिया। अब हिन्दी दिवस हम इस याद के रूप में मनाते हैं कि अगर इन बीते वर्षों में हिन्दी के उत्थान के सतत एवं गंभीर प्रयास किये गये होते तो हमारी एक सर्वमान्य राष्ट्रभाषा हो सकती थी।

आखिरकार एक सामान्य भारतीय थोड़ी कोशिश जैसी उत्थानहिन्दी सीख लेता है पर अंग्रेजी पर काबू पाने के लिए उसे वर्षों शिक्षा लेनी पड़ती है। राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ सांस्कृतिक और व्यापारिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक समान राष्ट्रभाषा उपयोगी सिद्ध हो सकेंगी। हम इस लेख के माध्यम से इस मुद्दे को एक मंच प्रदान कर रहे हैं और सभी प्रबुद्ध लोगों को इस पर अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित करते हैं।

# प्लॉसमेंट कमिटी एक सुबह

## जागे भाग गुलाल के

डॉ. कुमार विश्वास

आज होतिका के अवसर पर जागे भाग गुलाल के, जिसने मृदु चुम्बन ले डाले हर गोरी के गल के। आज रंगो तन - मन अन्तर - पट, आज रंगो धरती सारी, सागर का जल लेकर रंग दो, काश्मीर केशर - क्यारी। आज न हों मजहब के झगड़े, हों न विवादित गुरुबानी, आज वही रसर गँज़े, जिसमें रंग भय हो रसाखानी। रंग नहीं उपहार जानिये, अशुपति की ससुराल के जिसने मृदु चुम्बन ले डाले हर गोरी के गल के आज होतिका के अवसर पर जागे भाग गलाल के जिसने मृदु चुम्बन ले डाले हर गोरी के गल के।।।



आज रसर से इंद्रेव ने रंग बिखेरा है इतना, गीता में शब्द जितनी और प्यार लिरंगे से जितना इसी रंग को मन में धारे फाँसी चढ़ कोई बोला “देश - धर्म पर मर मर मिट्ठे को रंगो बसन्ती फिर चोला” आशा का रसर्जिम रंग डाली, काले तन पर काल के जिसने मृदु चुम्बन ले डाले हर गोरी के गल के। आज होतिका के अवसर पर जागे भाग गलाल के जिसने मृदु चुम्बन ले डाले हर गोरी के गल के।।।

कृष्ण मिले राधा से ज्यों ही रंग उड़ाती अलियों में समय रसर्यम् ही ठहर गया तब गोकुल वाली गतियों में, वस्त्रों की सीमायें दृटी, हाथों को आकाश मिला, गोरे तन को रसर्यम् तन से इक मादक विश्वास मिला, हर गंगा - यमुना से लिपटे लम्बे दृक्ष तमाल के जिसने मृदु चुम्बन ले डाले हर गोरी के गल के। आज होतिका के अवसर पर जागे भाग गलाल के जिसने मृदु चुम्बन ले डाले हर गोरी के गल के।।।

'Midsems' ये दो शब्द पता नहीं कितना भयभीत कर देते हैं हमें। फिर भी परीक्षाओं के ठीक पहली रात पढ़ाई शुरू करना अब जैसे हमारी आदत बन चुकी है। जो assignments दो महीनों में नहीं बनाये जाते हमसे, वो सब परीक्षा के खौफ से उस रात कुछ छंटों में ही खट्टम करने की cali हमर्में है। इसके अतिरिक्त हम क्रिकेट मैच देखना नहीं भूलते, चाहे अगले दिन हमारी दो परीक्षाएँ हों और हम अभी भी उस विषय में शून्य हो।

इस बार भी हर बार की तरह देखा गया कि कुछ जनता परीक्षा लिखने आधा - एक घंटा देर से पहुँची, कारण nightout...। हमारी इनसे असीम साहानुभूति है और हम समझते हैं कि ऐसे कठिन विषयों की परीक्षाओं में देर से पहुँचने के सीधे संकेत क्या होते हैं। यह खासकर फल्टों की mechanics की परीक्षा में देखा जाता है। यह विषय उन कठिन विषयों में से ही एक है जो JEE के समय भी छात्रों का जीवन दुष्कर बनाता था। काफी लोग तो mechanics का नाम सुनते ही halu हो जाते हैं।

परीक्षाओं का दौर canteens, nescafés और stationary दुकानों के लिए फायदेमंद साबित होता है। ज्यों कि जनता रात - रात भर जगकर पढ़ती है, तो रसायनिक ही है ज्यादा भूख लगता। KGP की जनता तो किसी के treat में भी पहुँच

जैसे हमारे IITKGP में पहली बार प्लॉसमेंट कमिटी का औपचारिक गठन हुआ है, हमारे रिपोर्टर की प्लॉसमेंट कमिटी सदस्य अभिनव अंकुर से हुई बातचीत का संक्षिप्त वृत्तांत सुनिए।

रिपोर्टर : प्लॉसमेंट कमिटी किस प्रकार संगठित है?

अंकुर : ये 6 सदस्यों की टीम है, जिसमें जिमखाना वाईस प्रेसिडेंट भी शामिल है। हम प्रो. गौतम सिन्हा के निदेशन में कार्य करते हैं। पहली बार ऐसे किसी औपचारिक प्लॉसमेंट का संगठन हुआ है।

रिपोर्टर : इस कमिटी का गठन क्यों हुआ? ये क्या कार्य करती है?

अंकुर : हम सब प्रो. गौतम सिन्हा के मार्गदर्शन में निदेशित कार्य करते हैं। हम यह देखते हैं कि किन कम्पनियों से संपर्क करना है, Pre Placement Talk एवं internship के लिए अनुकूल तरीकों का गठन और पूरे कार्य की देख - रेख करते हैं। इसका गठन इसलिए हुआ कि प्रो. गौतम सिन्हा को विद्युत कार्यों के लिए और हाथों की जरूरत थी।

रिपोर्टर : क्या संस्थापन तथा प्रशिक्षण के लिए विदेशी कम्पनियों से संपर्क किया जा रहा है? इस विषय में कितने हृद तक काम हो चुका है? कितनी कम्पनियों के आने की उम्मीद है?

अंकुर : विदेशी कम्पनियों से संपर्क किया जा रहा है। पर अभी तक किसी कम्पनी के आने की संपुष्टि नहीं हुई है। इस बार पिछले बार से ज्यादा कम्पनियों के आने की उम्मीद है।

रिपोर्टर : क्या संस्थापन के नियमों में कुछ पर्चिवर्तन होगा?

अंकुर : हाँ, आवेदन पत्र online हो जाएँगे, 10वीं एवं 12वीं कक्षाओं के अंकपत्रों का भी गठन होगा और CVs भी online जमा होंगी।

रिपोर्टर : क्या भारतीय कम्पनियों के वेतन बढ़ाने की उम्मीद है?

अंकुर : हाँ।

रिपोर्टर : CV प्रमाणीकरण की क्या प्रक्रिया अपनाई जाएगी?

अंकुर : अभी के लिए तो academic data के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया जारी है। अगर इसमें सफल होते हैं, तो आगे चलेगी प्रमाणीकरण प्रक्रिया।

रिपोर्टर : प्लॉसमेंट कमिटी किस प्रकार सारे विभागों का प्रतिनिधित्व करती, क्या इसमें कोई पक्षपात की आशंका है?

अंकुर : ऐसी कोई बात नहीं है।

रिपोर्टर : क्या कुछ नया हो रहा है?

अंकुर : तीन नई चीज़ें :

1. कम्पनियों को TnP brochure भेज रही है जिसमें IITKGP के बारे में उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान दिया जाएगा।
2. TnP की अपनी website बन गयी है।
3. CVs online भेजी जाएँगी (CV server)।

रिपोर्टर : कोई संदेश?

अंकुर : 'नई कम्पनियाँ और ज्यादा कम्पनियाँ हर दिन'।

रिपोर्टर : धन्यवाद।

## उप्र!!! Midsems....

जाती है। इस विषय में सारी शर्म और हया की हानि हो जाती है। Treat देनेवाले बंदे से अपना कोई नाता स्थापित कर, जनता treat हड्ड पेटी है।

Xerox दुकानों का मंदा धंधा मानो Bullet Train से भी तेज़ चलने लगता है। कई लोग technology का



पर्चिया देते हुए notes के pics लेते दिखते हैं। मर्गुओं को इस दौरान जनता का अनपेक्षित ध्यान मिलने लगता है। उनके कमरों पर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती है। उनसे पाठ पढ़ने के लिए मिन्नर्स की जाने लगती है। Powercuts के

बावजूद लोग पढ़ाई में मर्ग दिखाई पड़ते हैं।

Hall library और CL के सूने बीरान आँगन, फिर जे मर्गुओं की किलकारियों से गूँज उठते हैं। पुराने परीक्षा पत्र इकट्ठा करने में जनता जुटी रहती है, पर हर प्रश्न नया - नया सा लगता है। सब दरवाजे बंद होते व्यतीत होते हैं। तब मर्गुओं के कमरों का द्वार ही आखरी केवैया व्यतीत होता है जो अपनी नैया का पार लगवा सकता है। F127 मानो पढ़ाई का मंदिर बन गया हो। वहाँ पढ़ने के लिए इतनी भीड़ उमड़ पड़ती है कि मानो वहाँ पढ़ने से परीक्षा में कुछ चमत्कार हो जाता हो। चलो एक बात का आश्वासन होता है कि वहाँ दूसरों को पढ़ते देख आप भी शर्म से कुछ पढ़ ही लेते हैं।

तो दोस्तों यही देखा गया है कि हर कोई परीक्षा मर्गने के बाद यही सोचता है कि अगली बार पहले से ही पढ़ाई करेंगे और अच्छे अंक प्राप्त करेंगे। उनका यह भ्रम तो बना ही रहेगा, लेकिन बुद्धिमत्ता यही है कि आप सब कुछ आखरी दिन के लिए न छोड़ें।

# संपादक के नाम

प्रिय आवाज़ टीम,

पिछले अंकों में आपने जिस बेबाक अंदाज़ में खबरों को पेश किया है वो अपने आप में काबिली तारीफ है। न केवल खबरों की प्रासंगिता बल्कि उनकी प्रस्तुति भी हमें अत्यंत पसंद आई। प्रकाशन के तीन अंकों में ही यह KGP संस्कृति का हिस्सा बन गया है, साथ ही आपने बहुत से अनछुए पहलुओं पर भी चोशनी डाली है और जनता को जागरूक करने का प्रयास किया है। इस पहले के लिए भी आप बधाई के पात्र हैं।

इस सफल प्रयास से उम्मीद जानी थी कि आगे भी अपनी ये पहल जारी रखेंगे, साथ ही जो थोड़ी बहुत त्रुटियाँ थीं, उन्हे दूर करते हुए पत्रकाचिता में मिसाल कायम करेंगे। परंतु, इसका प्रकाशन अचानक बंद हो गया तथा कई महीनों से बस हम अगले अंक का इंतजार ही कर रहे थे। हमारी आशा है कि आप इस पहले को जारी रखेंगे तथा अगले अंक के लिए हमारा इंतजार लंबा न होगा।

धन्यवाद,

शिव प्रकाश उपाध्याय,  
पटेल छात्रावास

## आवाज़ टीम

संपादक :	अरुणाभ परिहार कुमार अमिनव श्याम सुंदर
सह संपादक :	सुरेन्द्र क्षेत्री अमिनव प्रसाद विकास कुमार नारायण ठाकुर पंकज कुमार सोनी प्रवीण कुमार निशा सौरभ कुमार दुन्हुन तापस श्रीवास्तव
रिपोर्टर :	अमित कुमार
डिजाइन टीम :	हेड- सुमित सिंघल
सदस्य-	असित दलाई अयान मजुमदार

## आवाज़ हैल्पलाइन

यदि आपकी भी कोई समस्या या करना चाहते हैं पहल तो हम बनेंगे आपकी आवाज़। प्रशासन के लिए है आपके पास अगर कोई सुझाव या शिकायत तो हम करेंगे उनसे सीधी बात।

तो फिर देर किस बात की दीजिये अपनी आवाज़ को शब्द और हमें मेल कीजिये [awaaz.iitkgp@gmail.com](mailto:awaaz.iitkgp@gmail.com) पर।

अक्टूबर 2006 में जोरदार शुरूआत और नवम्बर तथा जनवरी के अंकों के साथ परवान चब्दी हमारी आवाज़ अचानक बंद हो गई। इसका हमें जितना खेद है उतना ही अफ़सोस भी। साथ ही साथ हमें इस बात का हर्ष भी है कि आवाज़ पाठक गण की चर्चा का विषय बन सका। उन्होंने नए अंक का जिस बेसब्री से इंतजार किया, उसके लिए हम उनके आभारी हैं। टीम आवाज़ आपको आश्वासन देती है कि इस अनियमितता को दूर कर लिया जाएगा और प्रत्येक मासिक इसका नया अंक आपके हाथों से होगा।

नए सत्र की घटनाओं का विवरण 20-20 विश्व कप का जिक्र किए बगैर शुरू नहीं हो सकता। क्रिकेट के हस्त नए संस्करण ने जहाँ हमें मिड-सेम के दौरान भी पढ़ाई से दूर जाने का बहाना दिया, वहाँ हमारे जीवन काल में खेल के

क्षेत्र में देश की सबसे बड़ी उपलब्धी से रुकू होने का जीका भी दिया। धोनी और उनकी युवा टीम को कप जीतकर देश का मान बढ़ाने के लिए अनेक बधाईयाँ। अब आपने संस्थान की बात करें, तो नया सत्र नये निदेशक के देख-ऐख में शुरू हुआ। जहाँ नये निदेशक के द्वारा कुछ कठोर कदम उठाए जाने की आशंका थी, वहीं इस ओर उनका संस्थान का अनुभन्स होना इस बात का आश्वासन था कि सभी कदम लाभेन्टि में ही लिए जाएंगे। अभी तक लिए गए अधिकांश निर्णय

सराहनीय ही रहे हैं और आशा है कि नया प्रशासन इसी तरह छात्रों के साथ सहयोगात्मक रूप से अपनाता रहेगा। नया सत्र soc 'n' cult events की संख्या में कमी लेकर आया है। यह एक ऐसा विषय है जिसपर सभी की अपनी-अपनी राय होगी, परन्तु हमारा यह मानना है कि छात्रों का बोझ हल्का करने का यह एक सराहनीय प्रयास है।

दालांकि इसका असर देखने के लिए हमें सत्र के खत्म होने का इंतजार करना होगा।

नए सत्र की शुरूआत देश-विदेश में हो रहे कई घटनाओं के साथ भी हुई। इस बार का 'प्रेसीडेंशियल इलैक्शन' कुछ 'अनप्रेसीडेंट' घटनाओं के कारण चर्चा में रहा। जहाँ हमें देश की पहली मिलिना राष्ट्रपति गिली, वहीं राष्ट्रपति चुनाव में कीचड़ उठाने और और अभी राजनीति के नए आयाम देखने को मिले। 1-2-3 संघीयी काफ़ी चर्चे में रहा। इस मामले पर खुद के पक्ष के प्रति अनाश्वरत राजनीतिक दलों से परस्पर समन्वय की अपेक्षा बेमानी होगी। वैसे इस मुद्दे के कारण देश में मध्यावधी चुनाव आए न आए, हमारी मध्यावधी परीक्षा ज़रूर आ गई। परीक्षा के बीत जाने पर अवश्य ही आपलीग 1-2-3 छोड़ कर अपने ग्रेड्स की गिनती में लग चुके होंगे तथा हमेशा की तरह मिड-सेम में रह गई कलार ऐन्ड-सेम में पूरी करने का प्रण तो रहे होंगे। पहले तो कुछ लोग ग्रेड्स की समस्या को राम-भरोसे छोड़ देते होंगे। अब युवाएँ राम के और आज़ीचित्य पर देशभर में अनेक सवाल उठाए गए हैं और राम के आस्तित्व का "कोई वैज्ञानिक प्रमाण" नहीं पाया गया है, ऐसे में लोग भी शायद ये काम राम - भरोसे छोड़ने के बदले ख्वायं ही करना पसंद करेंगे।

अपने सारे कष्टों के लिए हम जिस राम की प्रार्थना करते थे, आइये आज उसी राम से उनके खुद के अस्तित्व को बचाने की प्रार्थ ना करते हैं। या फिर प्रार्थना करते हैं उन राजनीतिज्ञों की

## बात संपादक की



राम के नाम के साथ, अगले अंक तक के लिए... राम-राम !

## आरक्षण, waiting list में

आजादी के 60 वर्ष! एक और जहाँ हम चाँद को छूने की बात कर रहे हैं, सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पूरे विश्व में अपना लोहा मनवा चुके हैं, सुरक्षा परिषद के पूर्णकालिक सदस्य बनने का दावा ठोक रहे हैं, वहीं अगर अखबारों में 'आरक्षण', इन खबरों से अधिक लाया रहे, तो इससे ज्यादा अफ़सोस की बात हमारे लिए और क्या हो सकती है? गौरतलब है, कि हम यहाँ उस आरक्षण की बात नहीं कर रहे जिसके क्षेत्र में लालू जी नित नए इनोवेशन कर रहे हैं; बल्कि यहाँ आरक्षण के दूसरे ध्वजावाहक की बात हो रही है।

आरक्षण के दूसरे ध्वजावाहक की बात हो रही है। यदि आम दाय की माने तो महाभारत काल में आँखें बंद कर निशाना लगाने वाला 'अर्जुन' शायद कलियुग में खुली आँखें से निशाना चूक गया।

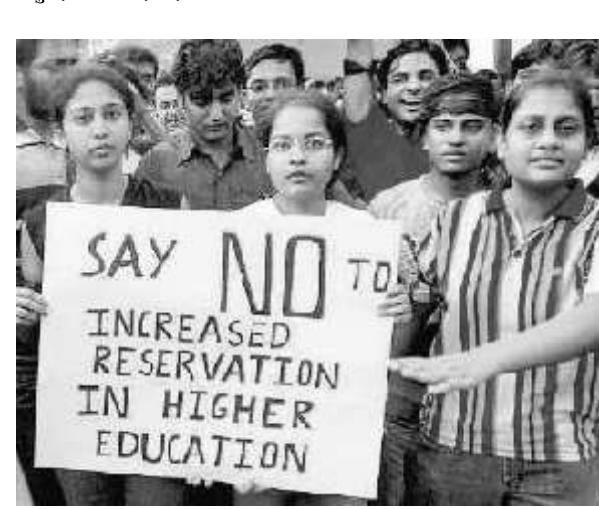
दालांकि OBCs को 27% आरक्षण देने के प्रस्ताव को फिलहाल तो उच्चतम न्यायालय ने 'वेटिंग लिस्ट' में डाला रखा है, परन्तु इसके साईड-इफेक्ट हमें आएंदिन दिख ही जाते हैं। जहाँ

कुछ 'सामान्य' जातियाँ खुद को OBC में शामिल करवाना चाहती हैं, वहीं कुछ जातियाँ रखवां को SC/ST न माने जाने की सूत्र में भरने-मारने को उतार रही हैं। यह

आरक्षीय समाज की कैसी विडब्ल्यूना है कि राष्ट्रपति महात्मा गांधी ने जिन दलितों के लिए 'हरिजन' नाम इसलिए रखा कि उन्हें भी बराबर समान नितों, वहीं आज रखवां को 'पिछड़ी' घोषित करने के लिए मर्ट-मिटने को तैयार है!! जातिवाद के शिकार तथक्षित 'पिछड़ी' जाति के लोगों का दलित कहने पर बिफर उठा तो फिर भी जायज़ है, लेकिन जब लोग पिछड़ी होने पर गर्व महसूस करने लगें तो नैतिक पतन की इससे बड़ी पराकाशा नहीं हो सकती।

यथार्थ यह है कि, समाज के जिन दबे-कुचते लोगों के उत्थान के लिए आरक्षण की कल्पना की गई थी, वे इसके फायदों से सामन्यतः वंचित ही रह जाते हैं। वर्त्तमान आरक्षण के इस जंजाल का लाभ या तो राजनीतिक दलों ने या फिर 'क्रीमी लोयर' ने ही उठाया है और अधिकांश अवसरों पर जरूरतमंदों के हाथ बस 'आरक्षण' के लिए योग्य' का बिल्ला ही आया है। हैरानी की बात तो यह है कि हर छोटी सी बात पर मुद्दा बाद में सुनने और विरोध पहले करने की विषय की प्रवृत्ति भी इस मामले में 'बैक सीट' ले लेती है। और ऐसा हो भी क्यों ना, आखिर उन्हें भी 'वोट बैंक' में अपना 'अकाउंट' चालू जो रखना है।

उच्चतम न्यायालय ने फिलहाल इस विषेयक के अनुपालन पर रोक लगा कर छात्र समुदाय को क्षणिक राहत ज़रूर दी है। परन्तु देश दिल में बेहतर तो यही लोग की राजनीतिक दल वोट बैंक की राजनीति को तिलांजली देकर आरक्षण की समस्या को वेटिंग लिस्ट से हटाकर इसका 'तत्काल' कोई पूर्णकालिक समाधान निकालें।



# अगांवी चोरी कहाँ होगी?

अगर आपके कानों तक ऐसी बार्ते पहुँच रही है तो सावधान हो जाइये। अन्यथा अगला मोबाइल/laptop /पर्स आपका होगा। फिर बार्ते आपके मुँह से

**राम खेलावन** यार, सुना है आज सबहसुबह AZAD से एक और मोबाइल चोरी हो गया। **पिचकारी सिंह** अरे! मैंने भी सुना है कि LLR से कल रात तक एक laptop चोरी हुआ है।

इन चोरियों को बढ़ावा देने में छात्र भी पीछे नहीं हैं। अक्सर ऐसा देखा गया है कि छात्र बिना कमरे लाँक किए गायब रहते हैं और

निकलेगी और कान हमारे हाँगे। पिछले कुछ दिनों से॥। कैम्पस के अंदर चोरियाँ कुछ इस तरह बढ़ी हैं कि करीब 150 लोगों को अपना मोबाइल, 34 लोगों को अपना laptop और कुछ 8 - 10 लोगों को अपना पर्स गवाना पड़ा है। जो छात्रावास इन चोरियों से सबसे ज्यादा प्रभावित एवं हताहत हुए हैं, वे हैं LLR, AZAD, MMM एवं NEHRU। अगर कहीं पर चोरियाँ होती हैं तो चोरी का समय मध्य रात्रि के बाद का और सुबह होने से पहले तक का होता है। लैकिन यहाँ चौंका देनेवाली बात यह है कि इन छात्रावासों में चोरियाँ सुबह 5 से 10 बजे के बीच हुई हैं। अधिकांशतः चोरियाँ तो बिल्कुल ही चौंका देनेवाली थीं। छात्र सुबह ब्रह्मण्ड करने या नहाने बाथरूम में जाता है और वापस जब कमरे में आता है तो मोबाइल/laptop नदारद पाता है। इतना ही नहीं, एक छात्र कमरे में सो रहा होता है, लैकिन दरखाजा अंदर से बंद नहीं करता है और जब सुबह कक्षा जाने के लिए उठता है, तब तक चोर हाथ साफ कर चुका होता है। सच तो अब यही है कि अब ये छात्रावास पूरी तरह से सुरक्षित नहीं हैं। छात्रावासों में 24 घंटे सुरक्षा गार्ड लगे रहते हैं, उसके बावजूद चोरियों का होना सबको हैरत में डाले हुए है।



कमरे में laptop, मोबाइल ऐसे ही पड़ा हुआ होता है और उनका पर्स मेज पर आराम फरमा रहा होता है। चोरों को उक्साने में इन सब चीजों ने 'आग में धी' का काम किया है। अपनी इन्हीं लापरवाही का फल कई लोग भुगत चुके हैं। और ऐसा ही चलता रहा तो कई और चोरियों की संभावना बढ़ जाती है। किसी और पर विश्वास करने से बेहतर यही होगा कि छात्र अपने सामान की रक्षा स्वयं करें। अगर हम सावधान हो गए, तब या तो चोरियाँ बंद हो जाएँगी, या कोई न कोई चोर पकड़ा जाएगा और अगर कोई भी ऐसे पकड़ा गया, तो चोरों के पूरे गिरोह का भांडफोड़ किया जा सकता है। ये तो कुछ सावधानियाँ जो छात्रों को बरतनी पड़ेंगी। जहाँ तक बात हॉल कर्मचारियों और अन्य बाहरी व्यक्तियों के wing में आने को लेकर है, तो सफाई कर्मचारियों को तो रोका नहीं जा सकता है, थोड़ी तथा अखबार एवं दूध देनेवालों को रोकने से हॉल में असुविधा बढ़ रही है। जब भी कोई बाहरी व्यक्ति हॉल में प्रवेश करता है तो security counter पर रखे रेजिस्टर में अपनी entry करता है, लैकिन सिर्फ इतना ही पर्याप्त नहीं है। बात यह भी है कि हम सारे छात्रावासों को छावनी में भी तो तब्दील नहीं कर सकते हैं।

प्रश्न अब यह उठता है कि कौन है ये चोर और सुरक्षा में कहाँ कमी हो रही है? छात्रों का कहना है कि चोर कोई नये नहीं हैं। ये वही लोग हो सकते हैं जो बाहर बाहर wing में आया - जाया करते हैं। किसी बाहरी व्यक्ति का wing आना लगभग असंभव है। अगर शक की सुई धुमाई जाए तो जो लोग थेरे में आते हैं, वे हॉल में काम करनेवाले सफाई कर्मचारी, धोबी, अखबार हॉलनेवाले, wing में दूध देनेवाले और canteen तथा मेसा में काम करनेवाले कर्मचारी हैं। पिछले कुछ दिनों से अखबार वालों तथा दूध देनेवालों का प्रवेश वर्जित कर दिया गया है, लैकिन अभी भी हॉल में दिनदहाड़े चोरियाँ लोगों से पूछ - ताजे की गई, लैकिन अभी तक सफलता हाथ नहीं लगी है। चोरों में भी इनी चोरियाँ करने के बाद लगता है गजब

का आटमाइश्वास आ गया है और अब वो जिसका चाहे, जब चाहे सामान गायब करने का साहस रखते हैं। खैर, थाने में इन घटनाओं की FIR दर्ज कराई जा चुकी है। और पुलिस भी अपनी वर्तन से पूरी कोशिश, जो कि वो हमेशा से करती रही है, कर रही है। अगर पुलिस की सक्रियता देखी जाए तो उन्होंने अभी तक बसे एक laptop सही सलामत छात्र तक वापस पहुँचाया है। कुछ संदिग्ध लोगों से पूछ - ताजे की गई, लैकिन अभी तक सफलता हाथ नहीं लगी है।

समस्या बड़ी है और इसका कोई उचित समाधान नहीं दिख रहा है। पुलिस भी अपने चर्तर पर समाधान ढूँगे में जुटी हुई है। फिल्हाल, हम सिर्फ एक ही काम कर सकते हैं और वो है एहतियात बरतना। आप जब भी कमरे से बाहर जाते हैं, अपना कमरा ठीक तरीके से लॉक करें, किसी भी अन्जान व्यक्ति को wing में छुलने न दें और अगर कोई ऐसा व्यक्ति दिखता है तो तुरंत पूछ - ताजे करें। सामान आपको ही सावधानी आपको ही बरतनी होगी, हर समय छोकन्ना रहना होगा। समस्या आपकी है और समाधान भी आपके पास है।

## "आई.आई.टी. खड़गपुर को ऐसी मिसाल कायम करनी चाहिए कि लोग ईश्या करें"

नए सत्र में नए प्रसाशन द्वारा कुछ नए कदम उठाए जाएँगे ऐसी उम्मीद तो सबको थी, और हुआ भी ऐसा ही, लैकिन सुखद आश्चर्य यह है कि कठोर निर्णय की आशंका के विपरीत, ज्यादातर फैसलों को छात्र समुदाय ने तरह दिल से खीकार किया। दीक्षांत समारोह का बड़े पैमाने पर आयोजन हो या छात्रों के लिए 'मैंटर' व्यवस्था, सभी प्रयास काफ़ी साराहे गए। हालाँकि मुग़किन है कि कुछ निर्णयों से छात्रों को शिकायत हो और भविष्य में भी कठोर कदम उठाए जाएँ, लैकिन उम्मीद यही है कि सभी फैसले छात्रहित में हाँगे तथा छात्र-प्रसाशन सम्बन्ध और मज़बूत होंगे।

की प्रो तिवारी की पहल पर, प्रो पटनायक (आयोजन समिति के अध्यक्ष) की उपस्थिति में 'मंज़र' के प्रथम अंक का वित्तीय विवरण दैवार भी कर लिया गया है। SF और क्षितिज टीम ने भी बताया की पैसे के हिसाब - किताब का उनका काम भी पूरा है, हालाँकि सभी ने इस प्रक्रिया में किसी पैशेवर ऑफिसर की अनुपस्थिति को रखी रखा है। इसलिए यहाँ मेहमानों की लोकप्रियता को ही सर्वोदयिक महत्व दिया जाना लाज़मी भी है। लैकिन निदेशक के शब्दों में "महज़ नाच-गाने के लिए तो आसपास के लोटे कॉन्टेनर भी (कलाकारों को) बुला लेते हैं। हमें आईआईटी खड़गपुर का (हर क्षेत्र में) ऐसा उदाहरण पेश करना होगा जिससे बाकी लोग ईश्या

दर्शकों की संख्या और व्यवहार पर काबू पाया जा सके।

निदेशक महोदय की एक और चिंता पूरे सत्र तक खिचे Fests को लेकर भी थी। (गौरतलब है कि इस बार मंज़र इसी सेमेटर अक्टूबर में होना निर्धारित था) यहाँ भी 'क्षितिज' बिना किसी परिवर्तन के बच निकटा परन्तु SF तथा 'मंज़र' में कुछ इकेन्टस एक जैसे होने के कारण दोनों को एक साथ करने को कहा गया। आयोजकों के द्वारा, साथ आयोजन करने में आनेवाली कई व्यवहारिक प्रेशासनियों से प्रशासन को अवगत कराया गया परन्तु



**Manzar**  
THE IIT Kharagpur Literary Fest

निदेशक महोदय की राय में छात्र अकाउंटिंग्स में ज्यादा ध्यान दें इसके लिए ऐसे आयोजनों का संगठित होना ज़रूरी है। अतः इन किनाईयों को दोनों टीम को मिलकर दूर करना होगा।



कठोरों की शिकायत की वजह से उमड़ता जनसेवाब, जिसमें बाहर के लोगों की संख्या भी काफ़ी होती है, को सुरक्षा के लिए खतरा मानने वाले निदेशक महोदय की राय में इस दिशा में ध्यान देना अत्यावश्यक है। उनके अनुसार हमें ऐसे मेहमानों को बढ़ावा देना चाहिए जिससे कि मनोरंजन की मात्रा में कमी हुए बिना

कार्यक्रमों की लोकप्रियता की वजह से उमड़ता जनसेवाब, जिसमें बाहर के लोगों की संख्या भी काफ़ी होती है, को सुरक्षा के लिए खतरा मानने वाले निदेशक महोदय की राय में इस दिशा में ध्यान देना अत्यावश्यक है। उनके अनुसार हमें ऐसे मेहमानों को बढ़ावा देना चाहिए जिससे कि मनोरंजन की मात्रा में कमी हुए बिना



फल्खे भी ढंग रहे हैं kgp के ढंग में  
(Freshers' Dramatics Production)



दीक्षांत के लिए सजा संरथान

ये तांडव भी हमारा Foundation नहीं हिला सकता  
(TDS Foundation Day Production)

अभी दिल्ली(6.6 km) दूर है

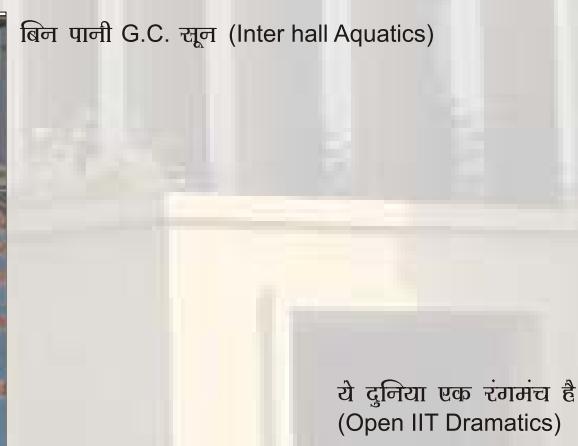


वन्दे मातरम्

चीनी कम...(Pre-Convocation Dinner)



बिन पानी G.C. सून (Inter hall Aquatics)



ये दुनिया एक रंगमंच है !  
(Open IIT Dramatics)

## Technology कार्टून कोना



मिडसेम की तैयारियाँ



?&#%  
पेपर कैसा हुआ ?



एण्डसेम में पास  
होने के लिए 50 में  
60 मारने होंगे